197
740 P
H
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1164/10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 740

20-1

149 150

* बन्देमातरम *

इंकलाब की लहर नं० २

Inqilab ki Lahar
No. 2

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
10 DEC. 1930

Sarojini Sandesh

सरोजिनी सन्देश

147

340

340

Printer
Govindram Gupta Rahbar

340

प्रकाशक—गोविंदराम गुप्ता रहबर

ता— शंकर दास सांवल दास बुकसेलर दिल्ली मूल्य -)
Martand Prees Delhi

740

891.431
Sa 755

गजल १

भरती हो लोनै रहो भारत मात पुकार ॥ टेक० ॥

खद्दर वस्त्र हो तनपर अहिंसा ढाल हो मनपर।

ले कानून शिकन तलवार भरती होलोनै रही भारत मात पु० ॥

नक्शा है वन्दे मातरम डेरा हो सत्याग्रह आश्रम।

होवे दुश्मन हथियार भरती होलोनै रहो भारत मात पु० ॥

की जालिमों मैदान में आई भागन लगी विदेशी भाई।

मान खद्दर हा हो कोर भरती होलोनै रही भारत मात पु० ॥

अब देखो रूपवती रण में ललकारी बृटिश गद्दि हिल गई सारी

की बहिने गिरफ्तार भरती होलोनै रहि भारत मात पु० ॥

जंग में मुंह जो मोड़ेगा सरकार से रिश्ता जोड़ेगा।

कहलावे गद्दार भरती होलोनै रही भारत मात पु० ॥

गजल नं० २

खुदाया कैसी मुसीबतों में यह हिन्दवाले पड़े हुए हैं।

कदम २ पे हमारे खातिर सितम के छाले पड़े हुए हैं।

जो आये मेहमां बनकर हमारे वह जुल्म करने लगे हमीं पर

गजब तो यह है मकां से बाहर मकान वाले पड़े हुए हैं॥

सरों पे दुश्मन खड़े हुए है गलों पे खंजर अड़े हुए हैं।

दिलों में नश्तर चुभे हुए हैं जिगर में छाले पड़े हुए हैं॥

हजारों बच्चो से बाप बिछुड़े यह तेरी किस्मत के होके टुकड़े।

सुहागनों के सुहाग उजड़े घर में ताले पड़े हुए हैं॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 740
Date 20.12.71

हुआ ज़माने की बिगड़ी नज़्ज़ार, कि ज़ुल्म होने लगे सरासर।
सुनाये फ़रियाद किस को जा कर ज़ुबां में छाले पड़े हुए हैं॥

नये नये गा० ३

वहशत ने क्या दिखाये हैं सामां नये नये।
गुलशन नये नये हैं बियाबाँ नये नये॥
देखा सितमगरों को नहीं चाल को क़याम।
बदले हैं रंग आसमां हर आं नये नये॥
रफ़्तार पर कोई कोई गुफ़्तार पर फ़िदा।
बन बन के आ रहे हैं मिहरबाँ नये नये॥
हो जाये गुल फिर न कहीं आग़ोश अन्दलीब।
गुलचीं बिठा रहा है पासबां नये नये॥
पिंजड़े में बन्द हूँ नहीं परवाज़ की ताक़त।
सैयाद बदलता है निगहबां नये नये॥
बुलबुल को क़ैद कर लिया फ़स्ले बहार में।
उसको बला से गर हों गुलिस्तां नये नये॥
क़िस्मत से अब तुम्हीं होगा न क़त्ले आरज़ू।
खींचें उसे हज़ारों बाग़बाँ नये नये॥
मेरे जुनूं ने मुझ को दिखाये हैं आंख से।
महशर के ये आसार नुमायाँ नये नये॥

ग़ज़ल नं० ४

"ढूंढ़ते हुए आते हैं ग़ैरों के कूचे को"

बेगाना हुआ अहिले वतन अपने वतन से।
उलफ़त नहीं अफसोस अनादिलको चमन से ॥
सौ जानसे हम पोशिशे योरुप पै बिके हैं।
मानूस बदन अब नहीं मलबूस वतन से
अग़यार की हर बात में हम दस्त जिगर हैं।
बेबस हुए मुहताज हुए अपने वतन से ॥
नेकी व बदी की जो हो पहिचान तो देखें।
आदम की तरह हम सभी नगे हैं बदन से ॥
वह नंग वतन हम है कि मर कर भी अदम को।
मुंह ढांपे हुए जाते हैं ग़ैरोंके कफ़न से॥

गज़ल नं० ५

दिले बेताब से नाले जो निकल जायेंगे।
वोतो क्या चीज़ हैं पत्थर भी पिघल जायेंगे ॥ दिले ॥
शिद्दते ग़म से जिगर में जो पड़े हैं नासूर।
ज़ख़में दिल मेरे रफूगर से न सिल जायें ॥
ख़िदमते मुल्क में हम मौत से डरने के नही।
जान जाता रहे अरमां तो निकल जायगे ॥
मुझसा जां बाज़ जो लाखों में भी है मिलनेका नहीं।
बे वफा तुझ से तुझे लाख भी मिल जायेंगे ॥
दूर दिल से मेरे हरगिज़ न कदूरत होगी।

लाख सीधा करो रस्सी के न बल जायेंगे ॥

हमला कर२ के वो थक जायेंगे जिस दम अहकर ।

होके शरमिन्दा कभी खुद ही संभल जायेंगे ॥

गजल नं० ६

बेदाद यह मजलूमों पै क्या २ नहीं करते ।

वह कौनसा फ़ितना है जो बरपा नहीं करते ॥

दर परदा जो मंजूर है जाहिर है हमें सब ।

पर राजे निहानी को तेरे वो नहीं करते ॥

तुम अपने ही एमाल से बदनामे जहां हो ।

हम आपके बेदाद का परवा नहीं करते ॥

जो चीज हमारी है वह मिल जाए तो खुश हैं ।

हम और किसी शै की तमन्ना नहीं करते ॥

नाजोनये अतफ़ाल समझते हो मेरा क़तल ।

क्यों इससे कि हम खून का दावा नहीं करते ॥

बेखुद सिफ़त हक़ का न इजहार करेगा ।

सूली पै चढ़ा दीजिये परवा नहीं करते ।

संगीय कफस जान लिये लेती है अपनी ॥

पर खौफ से सय्याद के शिकवा नहीं करते ।

रोने पै उतर आयें तो मरदूं को बहादें

कुछ बात है जो क़तरे को दरिया नही करते ।

वादा शिकनी उस बुते तन्नाज़ की खू है ॥

अब हम भी यह मुहब्बत का सौदा नहीं करते ॥

हमने तुम्हें हरदम निगाहे लुतफ़ से देखा ॥

तुम हमको बुरा कहते हो अच्छा नहीं करते ॥

(श्री त्रिभुवननाथ 'आज़ाद' सैनिक) गजल नं० ७

सितमगर की हस्ती मिटानी पड़ेगी ।

हमें अपनी कर के दिखानी पड़ेगी ॥

कभी उफ़ न लाएंगे अपनी ज़ुबां पर ।

मुसीबत सभी कुछ उठानी पड़ेगी ॥

बहुत हो चुका अब सहें हम कहांतक ।

ये बेइमानी सारी हटानी पड़ेगी ॥

विदेशी वसन औ मदों की जिनस्पर ।

हमें अब पिकेटिंग करानी पड़ेगी ॥

नमक को बनाकर औ कर बंद करके ।

आज़ादी की झण्डी उड़ानी पड़ेगी ॥

करेंगे हम आज़ाद भारत को अपने ।

विदेशी हकूमत मिटानी पड़ेगी ॥

तराना वतन नं० नं० ८ ।

(श्री० डाक्टर लक्ष्मीसहाय सक्सेना बी० ए०),

ऐ हम भी कभी जांबाज़ वतन, थे चर्ख हमें बरबाद न कर ॥

ज़िन्दा हैं मगर यह जीवन नहीं अब और सितम ईजाद न कर ॥
ज़र और जवाहर सारा लुटा, सब शान गई नादार बने ।
फैशन पै लुटाते मुल्क का ज़र नाशाद का क्यों तू शाद न कर ॥
जब गांधी जी ने ज़ोर दिया जेलों के उधर दरवाज़े खुले ।
हम आहो बुका से काम जो लें देते हैं उधर फरयाद न कर ॥
गोलमेज़ का तोहफ़ा दिया जो हमें नादान खुशी से उछलने लगे ।
क्या जाल बिछाया हिकमत का जालों में फकत आज़ाद न कर ॥
कांग्रेस ने जो देखा रंग बुरा किया डंका बजा आज़ादी का ।
है कृष्णमुरारी कर तू मदद मज़लूम का अब बेदाद न कर ॥

स्वतन्त्र गान ग० नं० १

अय अहले हिन्द कह दो सब एक ज़बान हो कर ।
हिन्दोस्तां रहेगा हिन्दोस्तान बन कर ॥
आपस में हम रहेंगे जिस्म और जान हो कर ।
चमकेंगे आस्मां पर क़ौमी निशान बन कर ॥
घबड़ायेंगे न हरगिज़ बिगड़े जो काम बन कर ।
पर अब नहीं रहेंगे हिन्दी गुलाम बन कर ॥
अय नौजवानों तुमपर इज़्ज़त का ताज होगा ।
भारत निवासियों का जिस दिन स्वराज्य होगा ॥
दुनिया के लोग हमपर मुतलक नहीं हसेंगे ।
जालों में दूसरों की अब हम नहीं फसेंगे ॥

वीर बालिकायें ग० १० (श्री रामसिंह वर्मा 'रत्न')

हम देख चुकी हैं सब कुछ पर अब करके कुछ दिखला देंगी।
निज धर्म कर्म पर दृढ़ होकर कुछ दुनिया को सिखला देंगी॥
है क्या कर्तव्य हमारा अब पहचान लिया हमने उस को।
अरमान यही अब दिल में है लन्दन का तख्त हिला देंगी॥
समझो न हमें कन्यायें हम हैं हम दुष्टनाशिनी दुर्गा हैं।
कर सिंहनाद आजादी का दुष्टों का दिल दहला देंगी॥
राष्ट्रीय ध्वजा लेकर कर में गावेंगी राष्ट्र गीत प्यारे।
दौड़ा कर बिजली भारत में मुर्दे भी तुरन्त जिला देंगी॥
बेड़ियां गुलामी काटेंगी आजाद करेंगी भारत को॥
उजड़े उपवन में भारत के अब प्रेम प्रसून खिला देंगी।
कम्पित होगी धरती हो क्या हो आसमान हिल जायेगा।
'कविरत्न' वज्र की भांति तड़प रिपुदल का दिल दहला देंगी॥

आजादी या मौत ग० नं० ११

(श्री हरद्वारप्रसाद बा० ए० एल एल० बी०)

अब तो आजादी बिना जीना हमें दुश्वार है।
इसलिये हो मुल्क पर मिटने को अब तैयार है॥
आबरू इज्जत गंवाकर हो गये कैसे जलील।
हा! हमारी जिन्दगी संसार में भू भार है॥
इन्तजारी हो चुकी अब सब्र भी जाता रहा।

उनकी बातों पर हमें कुछ भी नहीं इतबार है ॥
जिन्दगी वह खाक है जिस में न आजादी रहे ।
इस गुलामी जिंदगी को बार सौ धिक्कार है ॥
है तमन्ना दिलकी यह आजाद ही होकर रहें ।
सब दिलोंकी धुन यही यह सब दिलोंका तार है ॥
मुल्क हो आजाद तकलीफें उठाएंगे सभी ।
जेल जाने से जरा हमको नहीं इनकार है ॥
गोलियां हम पर चलें शूली मिले फांसी चढ़ें ।
गन मशीनोंसे भी अब मरना हमें स्वीकार है ॥
नरक भी जाना पड़े तो हम खुशी से जायंगे ।
हिन्द के उद्धार को वह स्वर्ग ही का द्वार है ॥

प्यारा जवाहर गजल नं० १२

[श्रीश्यामलाल वर्मा "कुसुमबंधु"]

भारत-युवक-हृदय का अरमान है जवाहर ।
निज राष्ट्र-बांसुरी की मृदु-तान है जवाहर ॥
उठती है इसके रगमें जातियता की लहरें ।
शुचि सादगी के घर का सामान है जवाहर ॥
कृषकों का है कलेजा श्रम-जीवियों का भेजा ।
अंत्यज अनाथगण का प्रिय प्राण है जवाहर ॥
असमानता पिशाचिन के सिर को काढने को ।

उम्मीद एकता का कियाम है जवाहर ॥
सच्चा है शुद्ध सेवक भारत-वसुंधरा का।
अद्भुत बली अली हैं, हनुमान है जवाहर ॥
वैरी विरोधियों के चकमों में नहीं आता।
इतिहास का हैं पंडित: गुण-खान है जवाहर ॥
माता का लाड़ला है, प्यारा है ये पिता का।
गांधी महात्मा का, फरमान है जवाहर ॥
ऐ आंखवालो, आओ, देखो इसे परखो।
देवी स्वतंत्रता की संतान है जवाहर ॥
मृतकों में फूंकता है यह रूह आबरू की।
"राधेश्याम" क्रांति दल का कप्तान है जवाहर ॥

हसरते दिल

ग़ज़ल नं० १३ [श्रीयुत 'बिसमिल']

देखना है किस क़दर दम खंजरे क़ातिल में है।
अब भी यह अरमान यह हसरत दिले बिस्मिल में है॥
ग़ैर के आगे न पूछो इसमें है इक ख़ास राज़।
फिर बता देंगे तुम्हें जो कुछ हमारे दिल में है॥
खींचकर लाई है सबको क़त्ल होने की उमीद।
आशिक़ों का आज जमघट कूचए क़ातिल में है॥
फिरते हो क्यों हाथ में चारों तरफ़ खंजर लिए।

आज है यह क्या इरादा आज यह क्या दिल में है ॥
इकसे करता नहीं क्यों दूसरा कुछ बात है।
देखता हूं मैं जिसे वह चुप तेरी महफिल में है ॥
उस पर आफत आएगी इक रोज मर ही जायगा।
यह तो दुनिया में नहीं जो कूचए क़ातिल में है ॥
एक जानिब है मसीहा एक जानिब है कज़ा।
किस कशाकश में पड़ी है जान किस मुश्किल में है ॥
ज़ख़्म खाकर भी उसे है ज़ख़्म खाने की हवस।
है मज़ा कितना तड़पने का तेरे बिस्मिल में है ॥

वीर आह्वान् (गज़ल नं० १४)

[श्री सोम देव शर्मा "सोम"]

पहन लो केसरी बाना, हुआ फर्मान है जारी। टेक
सजो अब युद्ध जाने को पुकारी जा रही बारी ॥
सुनो तुम ऐ महावीरो! करो कुछ याद बल अपना।
त्याग कर भाव कायर के, बनो तुम वीर व्रत धारी ॥
तजो आलस्य ऐ शूरो! ज़रा भुज-दंड फड़काओ।
काटो दासत्व की बेड़ी, करो आज़ाद माँ प्यारी ॥ पहन०
विनय युत पत्र पर भी जब नहीं कुछ ध्यान वे लाए।
किया तब नमक सत्याग्रह मचा संग्राम है भारी ॥ पहन०
गये प्यारे जवाहर जेल में फिर श्री महात्माजी।

अहिंसा सत्य का अब तुम करो संग्राम भयकारी ॥पहन०
हिला दो तख्त लंदन का कंपादो लार्ड इरबिन को ।
चकित हो आत्म बलका खेल देखे मेदिनी सारी पहन०
'शिवा' के बीर वंशज हो धार प्रतापके सम हो।
विजय पाओगे तुम निश्चय बने गांधी केअनुहारी ॥पहन०
चलो इकसाथ ऐ वीरो! पताका हाथ में लेकर ।
"साम" सब प्राण आहूती दो पूर्णहो यज्ञतब भारी॥ पहन०

चाहिए गजल नं० १५

[श्री दिनेशप्रसाद बाथम]

क्रांति के मैदान में खुश होके आना चाहिए ।
सत्य-आग्रह के लिये तन मन लगाना चाहिए ॥
देश-सेबा में लगाना प्राण की बाजी पड़े ।
तो खुशी से हम सबों को सिर कटाना चाहिए ।
देश सेवक सह रहे हैं कष्ट भारी आजकल ॥
साथ दे उनसज्जनों का दुख बटाना चाहिये ।
दुख सहे बिन भाइयों का दुःख कैसे दूर हो ॥
स्वार्थ साधन से सबों को दिल हटाना चाहिए ।
तोड़ दो जंजीर अबतो दासता की मित्रवर ।
पाठ आजादी का अब सबको पढ़ाना चाहिए ॥
किंतु हिंसा का समय हरगिज नहीं है भाइयो ।

नम्रतायुत सत्य आग्रह को निभाना चाहिये ॥
अब हटाओ अपने मनसे वैर भावों को "दिनेश" ।
संगठन कर प्रेम से सबको मिला ना चाहिए ॥

बाकी है ग० नं० १६

अभी देर जोशे शुजाअत में यार बाकी है ।
खुदा के हुक्म का बस इन्तजार बाकी है ॥
जफा उधर से अगर बेशुमार बाकी है ॥
इधर भी दिल में अभी इख्तियार बाकी है ॥
खिलाफे अदल न हो ये खिलाफे दादगिरी ।
वह देख तेगे सिदाकत में धार बाकी है ॥
गुलों को चुन लिया बुलबुल को भी असीर किया ।
वह चमन है कि फिर भी बहार बाकी है ॥
खुदा करे चलें बादे खिजा के वे झोंके ।
मिटे जो बाग़ में उनकी बहार बाकी है ॥
वह हमपर जुल्म करें बे हिसाब पर 'अंजुम' ।
हिसाब के लिये रोजे शुमार बाकी है ॥
सैयद महरबानतअली अंजुम

बैठे हैं ग० नं० १७

फेंक कर तेगो सिपर सीना सिपर बैठे हैं ।
हां हथेली पै लिये हम भी सर बैठे हैं ॥

पस्त हिम्मत हैं जो दुनिया में वह उठ क्योंकर ।
जिनका दिल बैठा है वह थामे जिगर बैठे हैं ॥
अब न उट्ठेंगे न उट्ठेंगे क़यामत उट्ठे ।
वरना भर घर के सरे राहे गुज़र बैठे हैं ॥
आँसुओं से है असीरों के क़यामत बरपा ।
उट्ठे तूफ़ां है यह सैयादों के घर बैठे हैं ॥
उनकी क्या मरने से डर इश्क वतन में जो लोग ।
मौत आने के पहले ही से मरे बैठे हैं ॥
क़सम खाये हैं जवानों ने जवां मर्दों से ।
आंख में आँसू नहीं खून से तर बैठे हैं ॥
बठना मेरा उन्हें शाक गुज़रता है "त्रिशूल" ।
आंखें नीची किये छेपे से मगर बैठे हैं ॥

शहीदों के खूं की लहर देख लेना ग० ३१

मेरे दिल में क्या है दहर देख लेना ।
सता लो रहे मत क़सर देख लेना ॥
दबाते चलो हम न बोलेंगे लेकिन ।
अब हैं चींटी के पर देख लेना ॥
हमारी यों हस्ती मिटाने के पहले ।
ज़रा अपनी हस्ती मगर देख लेना ॥
दिखाते हो नाहक़ हमें मौत का डर ।

हथेली पे रखली सर देख लेना
गुनहगार हमको बनाते हो अपने।
गुनाहों पे भी इक नज़र देख लेना।
नहीं जेल की कुछ रही अब है परवा।
हर इक मर्द बस्ता कमर देख लेना॥
जिसे आप कहते अमन है अमन है।
भरा है उसी में ज़हर देख लेना॥
किये हैं सितम बेकसों पर जो तुमने।
घो लाते है कैसा समर देख लेना॥
तुम्हें आज हालकूत समझती है कैसा।
मेरे बाक्यों का यह असर देख लेना॥
गुलामी का नामो निशां मेट देंगी।
शहीदों के खूं की लहर देख लेना॥
"बेनीमाधव" तिवारी।

गज़ल नं० १८

हथकड़ी जो हाथ में डाली मेरे सरकार है।
देश के आज़ाद करनेका यही हथियार है॥
फूंक देंगी इस तरह से मिस्ल लंका की तरह।
आह पुर तासीर यह जंजीर की झनकार है॥
जेलखा किसको है खद्दा किसको है सूली का डर।
देश पर कुरबान होने को हर एक तैयार है॥

गजल नं० १८

हुस्न की रौनक कभी थी अरगवानी चूडियां।
आज लेकिन हो गई जिल्लत की बानी चूडियां॥
आर है मैदान में तुझको अगर आते हुए।
मर्द बुज़दिल पहनले तु यह जनानी चूडियां।
मौत हो ऐसी कि खद्दर का दुपट्टा हो कफन।
खून से भीगी हुई हो अरगवानी चूडियां॥
इन्कलाबी चूडियाँ पहनो तुम इनको छोडदो।
हैं पुरानी जैहनियत की ये पुरानी चूडियां॥
कौम की खातिर बढो जो नाम लाफानी रहे।
कांच की किस काम की हाथों में फानी चूडियां॥
मर्द बन जाओ अगर स्वराज की है आरज़ू।
हुक्मरानी कर नहीं सक्ती जनानी चूडियां॥
उर्मिला और पद्मनी ने जिनको पहना था कभी।
वीरता की पहनलो वो खानदानी चूडियां॥
खूने नाहक जब गिरे तो उसमें उनको रंग लो।
मुस्तफे आला की जाकर हैं निशानी चूडियां॥
आज मरदों को दिखादो अपने मुल्को धाम को।
इस तरह करती हैं देखो पासबानी चूडियां॥
बालंटियर लेडी कहें अब कांच को अच्छा नहीं।
जाहनी जेबां हैं इन हाथों में आनी चूडियां॥

मिलने का पता :——

शंकर दास सांवल दास दरीबा कलां देहली